इकाई 1 मठाम्नाय

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 चार प्रमुख मठ

1.3 मठों के आदि आचार्य

1.3.1 श्रृंगेरी मठ एवं उसके आचार्य

1.3.2 शारदा मठ एवं उसके आचार्य

1.3.3 गोवर्धन मठ और उसके आचार्य

1.3.4 ज्योतिर्मठ एवं उसके आचार्य

1.4 सुमेर मठ

1.5 कामकोटि पीठ

1.6 मठों के क्षेत्र, आम्नाय-सम्प्रदायादि

1.7 मठाचार्यों के कर्तव्य

1.8 सारांश

1.9 पारिभाषिक शब्दावली

1.10 सन्दर्भग्रन्थ

1.11 बोधप्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप

- मठों का वर्णन कर सकेंगे।
- गोवर्धन आदि मठों की आचार्य-परम्परा को बता सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

प्रिय अध्येता! पञ्चम पाठ्यक्रम के सप्तम खण्ड की दूसरी इकाई में आपका हार्दिक स्वागत है। इस इकाई में आप मठ एवं मन्दिर परम्परा के विषय में विस्तार से अध्ययन करेंगे। जैसा कि आप जानते हैं हिन्दू संस्कृति को अक्षुण्ण एवं संगठित रखने में मठों और मन्दिरों का अतुलनीय योगदान है। मठों की स्थापना आदिशंकर भगवत्पाद ने सनातन-धर्म के प्रचार-प्रसार एवं रक्षार्थ की। इसलिए ये मठ अपने उद्देश्य में तत्परता से सन्नद्ध रहते हुए हिन्दू संस्कृति के संरक्षण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते रहे हैं।

आइए, इस अध्याय में हिन्दू संस्कृति के मुख्य आधारों में से प्रमुख मठों की परम्परा का संक्षेप रूप से सिंहावलोकन करें।

1.2 चार प्रमुख मठ

प्रिय अध्येता! शंकराचार्य ने हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक तथा अटक से लेकर कटक तक सम्पूर्ण भारत में हिन्दूधर्म-प्रचार की मंदाकिनी को प्रवाहित किया जिसमें तत्कालीन पतित पथ-भ्रष्ट, नास्तिक एवं धार्मिक रूप से निष्प्राण समाज अवगाहन करके पुन: सनातन-धर्म से अनुप्राणित एवं पवित्र होकर एक सूत्र में बंध गया। भारत की धार्मिक व्यवस्था को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए आदि शंकराचार्य ने भारत के चार तीर्थस्थानों पर चार मठों की स्थापना की। इनमें 'ज्योतिर्मठ' या 'जोशी मठ' बदरिकाश्रम के पास उत्तर में स्थित है। 'शारदा मठ' गुजरात प्रदेश के द्वारिकाधीश में स्थित है। कर्णाटक में 'शृङ्गेरी मठ' और भारत के पूर्वी भाग में जगन्नाथ पुरी में 'गोवर्धन मठ' स्थित है। 'ज्योतिर्मठ' का अधिकार-क्षेत्र भारत के उत्तरी तथा मध्य देश कुरु, कश्मीर, कम्बोज, पांचाल आदि में है। 'शारदा मठ' का अधिकार-क्षेत्र सिन्धु, सौवीर, सौराष्ट्र तथा महाराष्ट्र आदि में स्थापित किया गया। 'श्रृंगेरी मठ' का अधिकार क्षेत्र भारत के दक्षिणी भाग में स्थित आंध्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल प्रांत में माना गया और 'गोवर्धन मठ' के अधिकार में भारत के पूर्वी प्रांत यथा उ. प्र., बिहार, बंगाल, उड़ीसा आदि निर्धारित किए गए। इन मठों और इनके अध्यक्ष मठाधीशों का प्रधान कार्य अपने क्षेत्र के सनातन धर्मावलम्बियों में धर्म की प्रतिष्ठा को दृढ़ रखना और तदनुकूल उपदेश करना है। ये अध्यक्ष आचार्य शंकर के प्रतिनिधि-रूप हैं और इसलिए 'शंकराचार्य' की पदवी से विभूषित होते हैं। मठों के नियमन आदि के विषय में स्वयं आदिशंकर ने विस्तारपूर्वक अपने ग्रन्थ 'मठाम्नाय महानुशासन' में वर्णन किया है।

1.3 मठों के आदि आचार्य

मठों की स्थापना के अनन्तर आदि शंकर ने अपने चार शिष्यों को इनके अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया। यद्यपि शिष्यों के नाम में मतभेद नहीं है तथापि मठ-विशेष के अध्यक्ष के रूप में विभूषित इन शिष्यों की नियुक्ति में मतभेद है। किसी के मत में गोवर्धन मठ का अध्यक्ष 'पद्मपाद' को, श्रृंगेरी का 'पृथिवीधर' (हस्तामलक) को, शारदा मठ का 'सुरेश्वराचार्य' (विश्वरूप) को नियुक्त किया गया किन्तु दूसरे मतानुसार, गोवर्धन में 'हस्तामलक' शारदा मठ में 'पद्मपाद' और श्रृंगेरी 'सुरेश्वराचार्य' को नियुक्त किए जाने का उल्लेख है। ये नियुक्तियां इन चारों दिशाओं में प्रचलित वेद एवं उनकी शाखा के आधार पर की गईं। स्वयं आचार्य ने इस विषय में सभी मठों के पीठ आदि का निर्धारण किया। इस विषय में दिग्दर्शन हेतु गोवर्धन-मठ के विषय आचार्य द्वारा निर्धारित आम्नाय आदि इस प्रकार हैं –

गोवर्धनमठे रम्ये, विमलापीठसंज्ञके।
पूर्वाम्नाये भोगवारे श्रीमत्काश्यपगोत्रज: ।।
माधवस्य सुत: श्रीमान् सनन्दन इति श्रुत:।
प्रकाश ब्रह्मचारी च, ऋग्वेदो सर्वशास्त्रवित् ।।
श्रीपद्मपाद: प्रथमाचार्यत्वेनाभ्यषिच्यत।

अर्थात् आचार्य पद्मपाद काश्यप-गोत्रीय ऋग्वेदीय ब्राहमण थे अत: आदिशङ्कर ने उनकी प्रतिष्ठा पूर्व दिशा के गोवर्धन मठ में विमलापीठ पर उनकी प्रतिष्ठा की। इसी प्रकार सुरेश्वर शुक्लयजुर्वेद के अन्तर्गत काण्वशाखाध्यायी ब्राह्मण थे, जिनको आदिशङ्कर ने तैत्तिरीयोपनिषद् एवं बृहदारण्यकोपनिषद् पर भाष्य लिखने का आदेश दिया था। इसलिए

दक्षिण दिश के शृङ्गेरी मठ के अध्यक्ष के रूप में सुरेश्वराचार्य की नियुक्ति में सन्देह नहीं होना चाहिए।

क्रम	आचार्य	वेद	दिशा	मठ
१	पद्मपाद	ऋग्वेद	पूर्व	गोवर्धन
२	सुरेश्वर	यजुर्वेद	दक्षिण	श्रृंगेरी
३	हस्तामलक	सामवेद	पश्चिम	शारदा
४	तोटक	अथर्ववेद	उत्तर	ज्योतिर्

1.3.1 श्रृंगेरी मठ एवं उसके आचार्य

आचार्य शंकर के द्वारा स्थापित यह सबसे पहला मठ है। किंवदंती हैं कि राजा दशरथ के पुत्रेष्टि याग को सम्पन्नं कराने वाले ऋषि श्रृंगी इसी स्थान के निवासी थे जिनके नाम पर यह पर्वतीय स्थल 'श्रृंगगिरी' नाम से प्रसिद्ध हुआ जिसका अपभ्रंश 'श्रृंगेरी' है। पर्वत के ऊपर मल्लिकार्जुन शिव का मंदिर है। तुंग नदी के बाएँ तट पर स्थित इस मठ में आचार्य शंकर की उपास्या भगवती 'शारदाम्बा' की सुवर्णमयी मूर्ति यहां पर प्रतिष्ठित है।

इस मठ का विशेष ख्याति विजयनगर साम्राज्य का समय से अधिक होना प्रारम्भ हुई। वेद के भाष्यकार आचार्य सायण के बड़े भाई माधवाचार्य ने विजयनगर साम्राज्य की स्थापना में हरिहरराय व उनके भाइयों की पर्याप्त सहायता की और वे ही इस साम्राज्य के प्रभाव से 'विद्यारण्य स्वामी' के नाम से इस मठ के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त हुए। विजयनगर साम्राज्य ने ही विद्यारण्य जी की प्रेरणा से इस मठ को १३४६ ई में एक विस्तृत जागीर भी दी। विजयनगर साम्राज्य के पराभव के साथ ही मठ का संरक्षण भी क्षीण पड़ता गया जिसे कालान्तर में १६२१ ई में कालडी के नरेश वेंकटप्पा ने पुन: प्रतिष्ठित किया।

आरम्भ से ही यह मठ संस्कृत की अनेकों पाठशालाओं, जिनमें संस्कृत व्याकरण तथा वेदान्त की शिक्षा दी जाती हैं, का संचालन एवं सनातन धर्म का प्रचार करता रहा है।

इस मठ की आचार्य-परम्परा अब तक प्राय: ५० शंकराचार्य हो चुके हैं। वर्तमान समय में इस मठ के शंकराचार्य चन्द्रशेखरानन्द सरस्वती हैं। इस परम्परा के आरम्भ के कुछ आचार्य इस प्रकार हैं –

क्र	नाम	सन्यास-ग्रहण-काल	सिद्धि (-समाधि) काल	अवधि
१	श्री शंकराचार्य	२२ विक्रम संवत्	४५ विक्रम सं	२४ जन्म से लेकर कुल आयु ३२ वर्ष
२	सुरेश्वराचार्य	३० वि संवत्	६९५ वि सं	जन्म से लेकर कुल आयु ७२५ वर्ष
३	बोधघनाचार्य	६८० शक	८८० शक	२०० वर्ष

४	ज्ञानघनाचार्य	७६८ वि सं	८३२ वि सं	६४ वर्ष
५	ज्ञानोत्तमशिवाचार्य	८२७ वि सं	८७५ वि सं	४८ वर्ष
६	ज्ञानगिर्याचार्य	८७१ वि सं	९६० वि सं	८९ वर्ष
७	सिंहगिर्याचार्य	९५८ वि सं	१०२० वि सं	६२ वर्ष
८	ईश्वरतीर्थ	१०१९ वि सं	१०६८ वि सं	४९ वर्ष
९	नरसिंह तीर्थ	१०६७ वि सं	११५० वि सं	८३ वर्ष
१०	विद्यातीर्थ	११५० वि सं	१२५५ वि सं	१०५ वर्ष
११	भारतीकृष्ण तीर्थ	१२५० वि सं	१३०२ वि सं	५२वर्ष
११.	विद्यारण्य	१२५३ वि सं	१३०८ वि सं	५५ वर्ष

1.3.2 शारदा मठ एवं उसके आचार्य

इस पीठ के आदि आचार्य हस्तामलक थे। आरम्भ से लेकर वर्तमान समय तक यह पीठ कभी उच्छिन्न नहीं हुआ, सदा कोई न कोई आचार्य पीठ पर विराजमान रहा। यद्यपि इसका प्रधान स्थान द्वारिका पुरी रहा तथापि कभी-कभी इसका स्थान बदलता रहा है। इस परम्परा में प्राय: ८० शंकराचार्य नियुक्त हो चुके हैं। इसके आरम्भ के दस शङ्कराचार्य इस प्रकार हैं।

क्र	**आचार्य**
१	सुरेश्वराचार्य
२	चित्सुखाचार्य
३	सर्वज्ञानाचार्य
४	ब्रह्मानन्द तीर्थ
५	स्वरूपाभिज्ञानाचार्य
६	मंगलमूर्त्याचार्य
७	भास्कराचार्य
८	प्रज्ञानाचार्य
९	ब्रह्मज्योत्स्नाचार्य
१०	आनन्दाविर्भावाचार्य

1.3.3 गोवर्धन मठ और उसके आचार्य

इस मठ का मूल स्थान जगन्नाथ पुरी है। आचार्य आदिशंकर ने पादपद्माचार्य को इसका प्रथम अध्यक्ष बनाया। जैसा कि पूर्व में भी कहा गया है भारत के पूर्वी प्रांत यथा उ. प्र., बिहार, बंगाल, उड़ीसा आदि इसके अधीन आते हैं –

अङ्गबङ्गकलिङ्गाश्च मगधोत्कलबर्बरा: ।
गोवर्धनमठाधीना: कृता: प्राचीव्यवस्थिता: ।।

इस परम्परा में प्राय: १४५ शङ्कराचार्य नियुक्त हो चुके हैं। वर्तमान में इस मठ के शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद जी हैं। इस परम्परा के आरम्भ के कुछ शंकराचार्य इस प्रकार हैं -

क्र	आचार्य
१	पद्मपाद
२	शूलपाणि
३	नारायण
४	विद्यारण्य
५	वामदेव
६	पक्ष्मनाभ
७	जगन्नाथ
८	मधुरेश्वर
९	गोविन्द
१०	श्रीधरस्वामी
११	माधवानन्द

1.3.4 ज्योतिर्मठ एवं उसके आचार्य

आचार्य आदिशंकर के द्वारा स्थापित मठों में यह अंतिम है। उत्तर भारत में सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार एवं व्यवस्था की स्थापना के लिए इसकी स्थापना बद्रीनाथ धाम से प्राय: २० मील दक्षिण में इस मठ की स्थापना की। यही 'जोशी मठ' के नाम से भी प्रसिद्ध है। अत्यधिक शैत्य के आरन अक्टूबर से अप्रैल तक बद्रीनाथ धाम के कपाट बन्द होने की स्थिति में यहां की चल-प्रतिमाएं एवं अन्य आवश्यक वस्तुएं यहीं इसी मठ में स्थापित कर दी जाती हैं।

इस मठ के प्रथम अध्यक्ष 'तोटकाचार्य' हुए। ये शंकराचार्य के साक्षात् शिष्यों में अन्यतम थे। इस परम्परा के आरंभ के बीस शंकराचार्यों के प्रति श्रद्धाधिक्य के कारण पर्वतीय लोग इन्हें चिरजीवी एवं प्रात:स्मरणीय मानते हैं –

तोटको विजय: कृष्ण: कुमारो गरुडध्वज: ।
विन्ध्यो विशालो बकुलो वामन: सुन्दरोऽरुण: ।।
श्रीनिवास: सुखानन्दो विद्यानन्द: शिवो गिरि: ।
विद्याधरो गुणानन्दो नारायण उमापति: ।
एते ज्योतिर्मठाधीशा आचार्याश्चिरजीविन: ।।
य एतान् संस्मरेन्नित्यं योगसिद्धिं स विन्दति ।

क्र	आचार्य
१	तोटकाचार्य
२	विजयाचार्य
३	कृष्णाचार्य

४	कुमाराचार्य
५	गरुडध्वजाचार्य
६	विन्ध्याचार्य
७	विशालाचार्य
८	बकुलाचार्य
९	वामनाचार्य
१०	सुन्दराचार्य
११	अरुणाचार्य
१२	श्रीनिवासाचार्य
१३	सुखानन्दाचार्य
१४	विद्यानन्दाचार्य
१५	शिवाचार्य
१६	गिर्याचार्य
१७	विद्याधराचार्य
१८	गुणानन्दाचार्य
१९	नारायणाचार्य
२०	उमापति

इसके बाद के आचार्यों के नाम नहीं मिलते हैं जिससे यह परम्परा विच्छिन्न हुई सी प्रतीत होती है। कालान्तर में १५०० विक्रम संवत् से आगे के शंकराचार्यों की नामावली मिलती है, जो संख्या में प्राय: २५ है।

यहाँ तक ज्योतिर्मठ और बद्रीनाथ मंदिर दंडी स्वामियों के अधिकार में था किन्तु इसके बाद ब्रह्मचारी रावलों के हाथ में बद्रीनाथ मंदिर आ गया। विक्रम संवत् १८२३ में शंकराचार्य 'रामकृष्णस्वामी' के समाधिस्थ होने के बाद दुर्भाग्य से उनके उत्तराधिकारी के अभाव में मन्दिर में प्रधान पुजारी का भी अभाव हो गया। उस समय गढ़वाल नरेश प्रदीपशाह जी ने अपनी बद्रीनाथ-यात्रा के दौरान पुजारी का अभाव देखकर नम्बूदिरी जाति के प्रधान पाचक, 'गोपाल' नामक ब्रह्मचारी, जो भगवान् के लिए भोग बनाते थे, को 'रावल' पदवी से सुशोभित करके उन्हें छत्र-चंवर आदि उपकरणों से सुशोभित करके रामकृष्णस्वामी जी के उत्तराधिकारी के रूप में नियुक्त किया। तब से 'रावल' उसी जाति का होता आया है। इन रावलों का सम्बन्ध प्रधान रूप से मंदिर से ही है, मठ से साक्षात सम्बन्ध इनका नहीं है। मठ की गद्दी बहुत दिनों तक खाली रही फिर इधर प्राय: १०० वर्ष पूर्व 'स्वामी ब्रह्मानन्द' जी को इस गद्दी पर प्रतिष्ठित किया गया। तबसे पुन: दंडी स्वामियों को शंकराचार्य्ह के रूप में प्रतिष्ठित किया जाने लगा। वर्तमान समय में इसके शङ्कराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानन्द जी हैं।

1.4 सुमेर मठ

आदि शंकर ने वाराणसी में भी एक मठ की स्थापना की, जो 'सुमेर मत' के नाम से प्रसिद्ध है। सम्भवत: काशी को सनातन-धार्मिक-जगत का 'सुमेरु' मानकर ही इसकी प्रतिष्ठा की गयी। इसका उल्लेख 'मठाम्नाय' में भी है। इस मठ के अधिकार में अन्य मठों के अध्यक्षों के समान प्रांत-विशेष या क्षेत्र-विशेष में धार्मिक-अधिकार न होने के कारण इसका अभ्युदय अन्य के सामान न हो सका। प्राय: रामनगर-नरेश के द्वारा इसका प्रबंधन किया जाता रहा।

1.5 कामकोटि पीठ

कांची का कामकोटि पीठ भी आदि शंकर के द्वारा स्थापित पीठों में अन्यतम माना जाता है। यहाँ के अध्यक्ष शंकराचार्य की यह स्पष्ट मान्यता है कि आदि शंकर का सर्वप्रधान पीठ यही है। इन आचार्यों के अनुसार आदि शंकर चारों मठों पर तो अपने शिष्यों को कियुक्त किया किन्तु जीवन के अंतिम समय में स्वयम के लिए कांची में इस पीठ की स्थापना की। यहीं योगलिंग और भगवते कामाक्षी की पूजा-अर्चना में अपना अंतिम समय बिताकर समाधि ली। कांची स्थित आम्नाय का नाम – 'मौल्याम्नाय', पीठ – कामकोटि, मठ – शारदा, आचार्य – शंकर भगवत्पाद, क्षेत्र – सत्यव्रत कांची, तीर्थ – कम्पासर, देव – एकायुनाथ, शक्ति – कामकोटि, वेद – ऋक्, सन्यासी – इन्द्र, सरस्वती, महावाक्य – ॐ तत्सत् है। वर्तमान समय में इसके अध्यक्ष 'जयेन्द्रसरस्वती' जी हैं। इस मठ के ६८ आचार्यो का उल्लेख मिलता है, जिनमें आरम्भ के कुछ आचार्य इस प्रकार हैं –

क्र	आचार्य
१	श्री शंकरभगवत्पाद
२	सुरेश्वराचार्य
३	सर्वज्ञात्मन्
४	सत्यबोधाचार्य
५	ज्ञानानन्दाचार्य
६	शुद्धानन्दाचार्य
७	आनन्दज्ञानाचार्य
८	कैवल्यानन्दाचार्य
९	कृपाशङ्कराचार्य
१०	सुरेश्वराचार्य द्वितीय
११	चिद्धनाचार्य
१२	श्रीनिवासाचार्य
१३	चन्द्रशेखराचार्य प्रथम

1.6 मठों के क्षेत्र, आम्नाय सम्प्रदायादि

इन मठों का सांगोपांग विवरण अधोलिखित तालिका में प्रस्तुत है –

मठ	गोवर्धन	श्रृंगेरी	शारदा	ज्योतिर्मठ	सुमेरु	परमात्म	सहस्रार्कद्युति
क्षेत्र	पुरुषोत्तम	रामेश्वर	द्वारिका	बदरिकाश्रम	कैलास	नभस्सरोवर	अनुभव
आम्नाय	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	ऊर्ध्वाम्नाय	आत्माम्नाय	निष्फलाम्नाय
सम्प्रदाय	भोगवार	भूमिवार	कटिवार	आनन्दवार	काशी	पञ्चकोश:	
अंकित नाम	अरण्य, वन	सरस्वती, भारती, पुरी	तीर्थ, आश्रम	गिरि, पर्वत, सागर	सत्यज्ञान	योग	गुरुपादुका
देव	जगन्नाथ	आदिवाराह	सिद्धेश्वर	नारायण	निरंजन	परमहंस	विश्वरूप
देवी	विमला	कामाक्षी	भद्रकाली	पूर्णागिरि	माया	मानसी माया	चिच्छक्ति
आचार्य	पद्मनाभ	हस्तामलक	विश्वरूप	तोटकाचार्य	महेश्वर	चेतन	सद्गुरु
तीर्थ	महोदधि	तुंगभद्रा	गोमती	अलकनन्दा	मानस, ब्रह्मा, तत्वावगाहितम्	त्रिपुर	सत्यशास्त्रश्रवणम्
ब्रह्मचारी	प्रकाश	चैतन्य	स्वरूप	आनन्द		सन्यासी	सन्यास
वेद	ऋग्वेद	यजु:	साम	अथर्ववेद	सामवेद		
महावाक्य	प्रज्ञानं ब्रह्म	अहं ब्रह्मास्मि	तत्त्वमसि	अयमात्मा ब्रह्म			
गोत्र	काश्यप	भूर्भुव:	अविगत	भृगु			
शासनाधीन क्षेत्र	अङ्ग,बङ्ग, कलिङ्ग, उत्कल	आन्ध्र, द्राविड़, केरल , कर्नाटक	सिन्धु, सौवीर, सौराष्ट्र, महाराष्ट्र	कुरु, काश्मीर, पाञ्चाल्, काम्बोज			

इन प्रधान मठों से सम्बद्ध अनेक उपपीठ भी विद्यमान हैं, जैसे – कुण्डली मठ, संकेश्वर मठ, विरूपाक्ष मठ, हव्यक मठ, शिवगंगा मठ, कोप्पल मठ, श्रीशैल मठ, रामेश्वर मठ आदि। ये मठ प्रधान मठों के अंतर्गत ही आते हैं। उदाहरण के तौर पर, कुण्डली मठ एवं संकेश्वर मठ श्रृंगेरी मठ से पृथक् होने पर भी उसकी अध्यक्षता स्वीकार करते हैं।

1.7 मठाचार्यों के कर्तव्य

इन मठ के अध्यक्ष के रूप में जिस किसी भी व्यक्ति को नहीं बैठाया जा सकता है। इस पद के लिए अनेक सद्गुणों की नितांत आवश्यकता है। पवित्र, जितेन्द्रिय, वेद-वेदांग में विशारद, योग का ज्ञाता, सकल शास्त्रों में निष्णात पंडित ही इन मठों की गद्दी पर बैठने का अधिकारी है। यदि

मठाध्यक्ष इन सद्गुणों से युक्त न हो, तो विद्वानों को चाहिए कि उसका निग्रह करें, चाहे वह पद पर भले ही आरूढ़ हो गया है, ऐसी आज्ञा स्वयं आचार्य शंकर भगवत्पाद ने दी है -

उक्तलक्षणसम्पन्न: स्याच्चेत् मत्पीठभाग्भवेत् ।
अन्यथा रूढपीठोऽपि निग्रहार्हो मनीषिणाम् ।।

आदि शंकर ने मात्र मठों की स्थापना ही नहीं की अपितु उनके अध्यक्षों के लिए व्यवहार भी सुनिश्चित किया जो उनके 'मठाम्नाय महानुशासन' नामक ग्रन्थ में विस्तार से वर्णित है । जिसका सारांश यही है कि मठाध्यक्ष राष्ट्र की प्रतिष्ठा के लिए तथा धर्म के प्रचार के लिए अपने निर्दिष्ट प्रान्तों में सदैव भ्रमण करते रहें । उन्हें अपने मठों में ही नियमित रूप से निवास नहीं करना चाहिए अपितु अपने-अपने क्षेत्रों में विधिपूर्वक वर्णाश्रम धर्म की प्रतिष्ठा, प्रचार-प्रसार एवं सदाचार की रक्षा हेतु सन्नद्ध रहना चाहिए।

1.8 सारांश

भारत की धार्मिक व्यवस्था को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए आदि शंकराचार्य ने भारत के चार तीर्थस्थानों पर चार मठों की स्थापना की । इनमें 'ज्योतिर्मठ' बदरिकाश्रम के पास उत्तर में, 'शारदा मठ' द्वारिकाधीश में, 'शृङ्गेरी मठ' कर्णाटक में और 'गोवर्धन मठ' जगन्नाथ पुरी में स्थित है । आदि शंकर ने गोवर्धन मठ का अध्यक्ष पद्मपाद को, श्रृंगेरी का सुरेश्वराचार्य को, शारदा मठ का 'हस्तामलक को तथा ज्योतिर्मठ का तोटक को अध्यक्ष नियुक्त किया । इन मठों और मठाध्यक्षों हेतु आचार्य ने 'मठाम्नाय महानुशासन' नामक संविधान भी लिखा जिसके अनुसार इन शंकराचार्यों का दैयित्व अपने-अपने क्षेत्र में सनातन धर्म का प्रचार, प्रसार एवं संरक्षण करने का दायित्व दिया गया जिसका वे अद्यावधि पालन कर रहे हैं ।

1.9 पारिभाषिक शब्दावली

१. अभ्यषिच्यत = अभिषेक किया
२. विन्दति = प्राप्त करता है
३. रूढपीठोऽपि = पद पर बैठा हुआ भी
४. निग्रहार्हो = त्याग करने योग्य

1.10 सन्दर्भग्रन्थ

१. गोवर्धन मठ के आचार्य-परम्परा और आम्नाय आदि का वर्णन कीजिए।
२. श्रृंगेरी मठ के आचार्य-परम्परा और आम्नाय आदि का वर्णन कीजिए।

1.11 बोधप्रश्न

१. शाङ्करदिग्विजयम्, विद्यारण्यविरचित, आनन्दाश्रम संस्कृत ग्रन्थावली, ग्रन्थाङ्क २२, आनन्दाश्रम, पुणे
२. धर्मशास्त्र का इतिहास, पी वी काणे, उ प्र हिन्दी संस्थान, लखनऊ